K. Nand M.A III Sem's
20/09/2021

Q - Describe major types of sexual disorders.

लैंगिक विकृति के मुख्य प्रकारों की विवेचना करें।

Ans :- लैंगिकता प्राणी की जैविक आवश्यकताओं में से एक प्रमुख आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति प्राणी विपरीत लिंग से समागम द्वारा प्राप्त करता है। प्राणियों में मानव सबसे उन्नत प्राणी है। मनुष्य आज अधिक सभ्य और सुसंस्कृत हो गया है। आधुनिकता से समाज में कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। यौन विकृति (Sexual disorder) भी इसी आधुनिकता का प्रतिफल है। यह आधुनिकता के दुष्परिणाम से उपजे व्यक्तित्व विकृति (personality disorder), मनोविकृति (Psychosis), मनःस्नायुविकृति (Psychoneurosis) वाले पुरुषों एवं स्त्रियों में देखने को मिलता है। जिसमें मनुष्य लैंगिकता की संतुष्टि विचित्र या असामान्य तरीके से करता है। इन असमानताओं या विकृतियों को ~~प्रमुख प्रकारों का वर्णन निम्नलिखित~~ मनोरोग विज्ञानियों द्वारा कई प्रकारों में बाँटा गया है। डायग्नोस्टिक एण्ड स्टेटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर (Diagnostic and Statistical manual of Mental disorder) IV में भी विभिन्न

पहल .. इसका उपचार असम्भव मान

M.A III Seme K. Nand
20/09/2021

प्रकार के लैंगिक विकृति का वर्णन किया गया है। पूर्व से प्रचलित यौन आदि (Sex perversion) अथवा यौन विचलन (Sex aberration) को DSM I में नया नाम पाराफिलियाज (Paraphilias) दिया गया है। इस श्रेणी में आने लैंगिक रूप से विकृत व्यक्तियों की विशेषता होती है कि असामान्य व्यवहारों पूर्णरूपेन लैंगिक संतुष्टि प्राप्त करते हैं। वर्तमान में सभी मनोरोग विज्ञानियों द्वारा मान्य DSM IV जो अमेरिकी पद्धति है, के लैंगिक विकृतियों के प्रमुख प्रकार निम्नांकित हैं —

(B) लैंगिक विपथगामिता (Sexual Perversion) — x — x — x — x —

(i) वस्तु कामुकता (Festishism) —

वस्तु कामुकता से युक्त पुरुष या स्त्री विपरीत लिंगों का कोई वस्तु अपने पास सहेज रखता है और उस वस्तु के स्पर्शमात्र से ही अपनी कामुक इच्छाओं की पूर्ण संतुष्टि प्राप्त करता है। विपरीत लिंगों के निर्जीव वस्तु से इस विकृति से ग्रसित पुरुष या स्त्री अपनी काम भावना तृप्त करता है उसे फेटिस (Fetish) कहा जाता है और यह कुछ भी हो सकता है जैसे — विपरीत लिंग वाले के अन्तः वस्त्र, रूमाल, रूमाल उनके उपयोग में लाए गए कपड़े आदि। वस्तु कामुकता से ग्रसित व्यक्ति

Kr. Nand M.A. III Sem's
20/03/2021

में यौन समागम के लिए पूर्ण कामोत्ते[illegible]
को स्थिति प्राप्त करने के लिए पु[illegible]
साथी को रतिक्रिया (Intercourse) [illegible]
पूर्व शरीर के अंगों का स्पर्श क[illegible]
आवेग उत्पन्न करना पड़ता है। इस
लिए आलिंगन आदि का सहारा [illegible]
पड़ता है। कुछ महिलाओं के यो[illegible]
के मदन-शिश्न (clitoris) को म[illegible]
सहलाने की जरूरत होती है। इस
पश्चात ही वे पूर्ण आवेग प्राप्त
कर पाती हैं तत्पश्चात रतिक्रिया में [illegible]
सम्भोग कर पाती है।

(iii) वैजाइनिसमस (Vaginismus) — इस
दुष्क्रिया से पीड़ित स्त्रियों के यो[illegible]
की मांसपेशियाँ रतिक्रिया के समय इतनी अधिक
कर सख्त और संकीर्ण हो जाते हैं कि उनके पुरुष सा[illegible]
के लिए संभोग करना असंभव
हो जाता है। इस प्रकार की विकृ[illegible]
बलात्कार आदि आघातजनक स्थिति
से गुजरने वाली महिलाओं में अधिक
देखने को मिलता है।

यौनिक दुष्क्रिया के कारणों के [illegible]
में मनोचिकित्सकों का मत है कि इस प्रका[illegible]
की विकृतियों का विकास अधिकतर मन[illegible]
सामाजिक कारणों यथा— दोषपूर्ण सीखना,
अन्तर्वैयक्तिक समस्याएं, डर तथा चिन्ता की
भावनाएं आदि के कारण होता है।

K. Nand
M.A III Sem
20/09/2021

...से कुण्ठा... के ...
गए अद्यतन शोधों के पश्चात
उपचार भी संभव हो सका है।
पहले इसका उपचार असंभव था।
था। जैविक कमियों को शारीरिक
द्वारा उपचार से दूर किया जाता
मनोसामाजिक कारणों से विकसित
कुण्ठा विकृतियों का उपचार मनो-
वैज्ञानिकों द्वारा मनोचिकित्सा के द्वारा
हो पाया है। इनके द्वारा यौन साथियों से